अंक - 8

मई - 2021

शिक्षा के गोठ

मासिक ई-न्यूज़लेटर

स्कूल शिक्षा विभाग, छत्तीसगढ़ शासन

सम्पादकीय

विश्वव्यापी कोरोना महामारी की दूसरी लहर से हमारा चक्र एक बार फिर थम गया है। इन सब विषम परिस्थितियों के बावजूद हमारे राज्य की शिक्षा में नवाचारी गतिविधियाँ जारी है। स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा शिक्षा में नवाचार एवं ऑनलाइन/ऑफलाइन माध्यमों का उपयोग करते हुए "पढ़ई तुंहर दुआर" के सफल क्रियान्वयन को राष्ट्रीय स्तर पर सराहा गया है। केवल इतना ही नहीं शिक्षा के क्षेत्र में राज्य के विद्यार्थियों द्वारा तैयार विज्ञान एवं सामाजिक अनुप्रयोगों के अंतर्गत चयनित 3391 मूल विचारों एवं नवाचारों से छत्तीसगढ़ राज्य ने इंस्पायर मानक अवार्ड लेते हुए देश में तीसरा स्थान भी प्राप्त किया है। इन सब उपलब्धियों को प्राप्त करने में हमारे शिक्षकगण सहित शिक्षा विभाग की टीम का हर स्तर पर बहुमुल्य योगदान मिल रहा है।

राज्य में शासकीय स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूलों की हो रही बढ़ोतरी इस बात का हमें संकेत देती है कि आने वाला समय छत्तीसगढ़ प्रदेशवासियों के लिए शिक्षा का स्वर्णिम समय होगा। हम यह भी जानते हैं कि समाज का विकास शिक्षा एवं स्वास्थ्य पर बहुत अधिक निर्भर होता है ।

बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु शिक्षकों द्वारा वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की बेहतरी के लिए किए जा रहे प्रयासों का हम स्वागत करते है। इस अंक में हमने विगत माह क्रियान्वित स्कूल शिक्षा विभाग के क्रियाकलापों को संकलित कर आपके समक्ष रखने का एक प्रयास किया है। शिक्षा के गोठ का यह "अंक-8" आप सभी को समर्पित है ।

डी. राहुल वेंकट आई.ए.एस.
संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद
छत्तीसगढ़

इंस्पायर अवार्ड में छत्तीसगढ़ तीसरे नंबर पर

राज्य के 3391 विचारों का चयन मानक अवार्ड के लिए

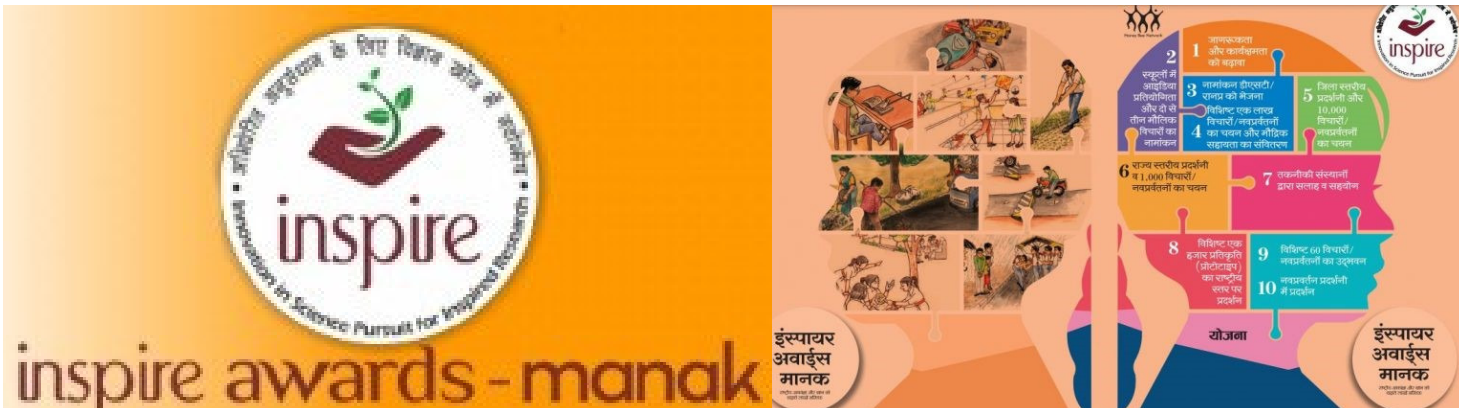

भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा इंस्पायर अवार्ड मानक योजना के अंतर्गत विज्ञान एवं सामाजिक अनुप्रयोगों में मूल विचार एवं नवाचारों के नामांकन के लिए छत्तीसगढ़ को देश के तृतीय सर्वश्रेष्ठ राज्य के रूप में चयनित किया गया है। इंस्पायर अवार्ड मानक योजना के तहत राज्य से विज्ञान एवं सामाजिक अनुप्रयोगों में मूल विचारों एवं नवाचारों हेतु भेजे गए कुल 55 हजार 565 नामांकन में से 3391 विचारों एवं नवाचारों का चयन मानक अवार्ड के लिए किया गया है। इस उपलब्धि मे स्कूल शिक्षा के प्रमुख सचिव डॉ. आलोक शुक्ला का कुशल मार्गदर्शन एवं लोक शिक्षण संचालनालय के संचालक जितेन्द्र शुक्ला का नेतृत्व प्रमुख रहा । इस मानक योजना में उप संचालक आशुतोष चावरे एवं सहायक संचालक श्री हरीश वरू का सराहनीय योगदन रहा । मुख्यमत्री श्री भूपेश बघेल एवं स्कूल शिक्षा मंत्री डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम ने मानक अवार्ड से जुड़े शिक्षा विभाग के पूरी टीम को बधाई दी है।

भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के सचिव श्री आशुतोष शर्मा ने छत्तीसगढ़ राज्य के प्रमुख सचिव स्कूल शिक्षा डॉ. आलोक शुक्ला को प्रेषित पत्र में छत्तीसगढ़ राज्य की इस उल्लेखनीय उपलब्धि की सराहना की है। उन्होंने इंस्पायर अवार्ड मानक योजना के तहत मूल विचारों एवं नवाचारों को बेहतर बनाने के लिए विभाग द्वारा शिक्षकों का प्रशिक्षण राज्यों एवं केन्द्रशासित प्रदेशों में किए जाने के लिए सलाहकार डॉ. संजय मिश्रा, संचालक डॉ. विपिन कुमार को राज्यों के शिक्षा विभाग से संपर्क किए जाने की जानकारी दी है। उन्होंने उम्मीद जताई है कि इस कार्यक्रम को सफल बनाने और शिक्षकों को युवा छात्रों के बीच रचनात्मक नवाचार की बेहतर समझ और प्राकृतिक संस्कृति के प्रशिक्षण के लिए आपका आवश्यक सहयोग एवं मार्गदर्शन प्राप्त होगा। गौरतलब है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा सफलतापूर्वक इंस्पायर अवार्ड मानक योजना 10 से 15 वर्ष की उम्र के बच्चे विज्ञान और सामाजिक अनुप्रयोगों की तरफ आकर्षिक और प्रेरित करने उनमें महत्वपूर्ण विचार एवं नवप्रवर्तन की भावना उत्पन्न करने के लिए संचालित किया जा रहा है। इस योजना का उद्देश्य नवसृजन एवं नवाचार, रचनात्मक और अभिनव सोच को स्कूली छात्रों में बढ़ावा देना है।

छत्तीसगढ़ राज्य के कक्षा छठवीं से दसवीं तक के होनहार बालक-बालिकाओं से सत्र 2020-21 में इंस्पायर अवार्ड मानक योजना के तहत ऑनलाईन पंजीयन का लक्ष्य 60000 रखा गया था। राज्य से कुल 55 हजार 565 बालक-बालिकाओं ने नामांकन किए ।

विदित हो कि विद्यार्थियों में विज्ञान के प्रति रूचि और रूझान बढ़ाने, उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तर्क क्षमता का विकास करने नन्हें बाल वैज्ञानिकों को अवसर प्रदान करने के लिए इंस्पायर अवार्ड मानक योजना के तहत भारत सरकार विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग नई दिल्ली और नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान भारत विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार का स्वायत्तशासी संस्थान (एनआईएफ) के द्वारा प्रत्येक वर्ष संचालित की जाती है।

MAY 2021

TIMES OF SAGES

Yes! We won't stop learning!

Despite the lockdown in place, teachers of SAGES continue to inspire students to learn through different kinaesthetic activities from home.

Ever since the lockdown, the teachers have only become more active and bubbling with passion to ensure learning doesn't stop for their students. From WhatsApp video call to Webex meetings, teachers are doing all they can to ensure students continue to learn despite school closure. Below are some trending hashtags on the social media platform created by SAGES Teachers.

1

#SAGESMOOC

Challenge to complete maximum eLearning courses in April for teachers.

2

#SAGESTHOUGHT4DD

Challenge to keep posting inspirational positive thoughts daily for students

3

#SAGESMYDREAMINDIA2030

Challenge to write essay or speak on the topic My India 2030

Content development training for SAGES begins

Virtual training held on 27th April by CGBSE & SCERT

SAGES LIVE

Weekly virtual talent show begins for SAGES on Facebook SAGES Young Professional Group

All SAGES now GIS Mapped

Go check your school at bit.ly/2R5K03M

Top 10 Activities: Apr 2021

Here are some activities that have been reported by SAGES teachers in the month of April 2021.

1. Essay writing
2. Virtual Talent exhibits of students
3. e-Learning on MOOC (DIKSHA/NISHTHA)
4. Elocution videos by students
5. Story telling competition
6. Quiz competition
7. Painting and Origami/Mask making
8. Gardening
9. Thought for the day
10. Short videos on CoVID precautions

SAGES LIVE: A special weekend event has been started for SAGES, where students are invited to showcase their talent in front of their school and family members.

(These student participation have garnered more than 6,000 views so far)

		P	C	L
#1	Adesh Kaur Bindra	54	477	1511
#2	Neeta Tripathi	66	251	2937
#3	Betty Thomas	53	155	627
#4	Bulbul Jaiswal Kundu	44	169	324
#5	Sangita Saha	62	46	404
#6	Shruti Pandey	62	10	100
#7	SAGES Mahalpara	63	0	117
#8	Neetu Soni	45	90	684
#9	Rakesh Kumar Soni	56	20	319
#10	Jagriti Sahu	52	27	109

SAGES LIVE : Participation by SAGES Students and Teachers

21 Apr - My India 2030 (Speech) | 23 Apr- Virtual Book Reading event | 30 Apr- Let's Pray for India (Song)

सर्वे क्रमांक पन्द्रह – 27 मार्च, 2021 से 25 अप्रैल, 2021

प्रिंट-रिच गाँव /वार्ड कार्यक्रम का क्रियान्वयन

सर्वे का उद्देश्य:

बच्चों एवं नव-साक्षरों को स्कूलों के लाक डाउन के दौरान समुदाय के सहयोग से अपने गाँव/वार्ड की दीवारों को साफ़ तैयार कर प्रिंट-रिच सामग्री लेखन हेतु उपलब्ध करवाते हुए सीखने में सहयोग देने हेतु संचालित कार्यक्रम की फील्ड में क्रियान्वयन की स्थिति से अवगत होना | गाँव/वार्ड को प्रिंट-रिच बनाने हेतु निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखे जाने के सुझाव दिए गए हैं-

- यह बच्चों एवं नव-साक्षरों को सीखने में सहयोग करने वाली सामग्री हो
- अच्छे पेंटर एवं बेहतर लेखनी वाले शिक्षक एवं विद्यार्थी को जिम्मेदारी देवें
- चर्चा पत्र में सामग्री सुझावात्मक है पर आप अपने शाला संकुल में बैठक आयोजित कर अपने अपने संकुल के लिए स्थानीय स्तर पर मंथन कर बेहतर से बेहतर डिजाइन सोचकर तैयार कर साझा कर सकते हैं
- इस कार्य हेतु शाला में उपलब्ध मीडिया बजट,युवा एवं इको क्लब के बजट का इस्तेमाल किया जा सकता है
- सभी शाला संकुल प्राचार्य इकत्तीस मार्च तक इस कार्य को संपन्न करते हुए इसकी लिखित जानकारी देंगे कि उनके शाला संकुल के सभी गाँवों/वार्ड में प्रिंट-रिच वातावरण तैयार कर उसका उपयोग किया जाने लगा है
- गाँव में अलग-अलग उपयुक्त स्थलों में योग, समाचार पढने, कहानी सुनाने, पुस्तक/पठन सामग्री दान केंद्र, शाला नहीं जा रहे बच्चों के सीखने, विभिन्न कौशलों को सीखने हेतु स्थल सुरक्षित रखा जाकर वहां भी उन कार्यों से संबंधित लेखन एवं चित्र आदि बनाने का कार्य संपन्न किया जाएगा |

विद्यार्थियों के लिए प्रश्न:

क्या आपका गाँव/वार्ड प्रिंट रिच गाँव/वार्ड बन गया है और आप उसका उपयोग कर रहे हैं ?
1685 विद्यार्थियों ने इसका जवाब हाँ में दिया है
1626 विद्यार्थियों ने इसका जवाब नहीं में दिया है

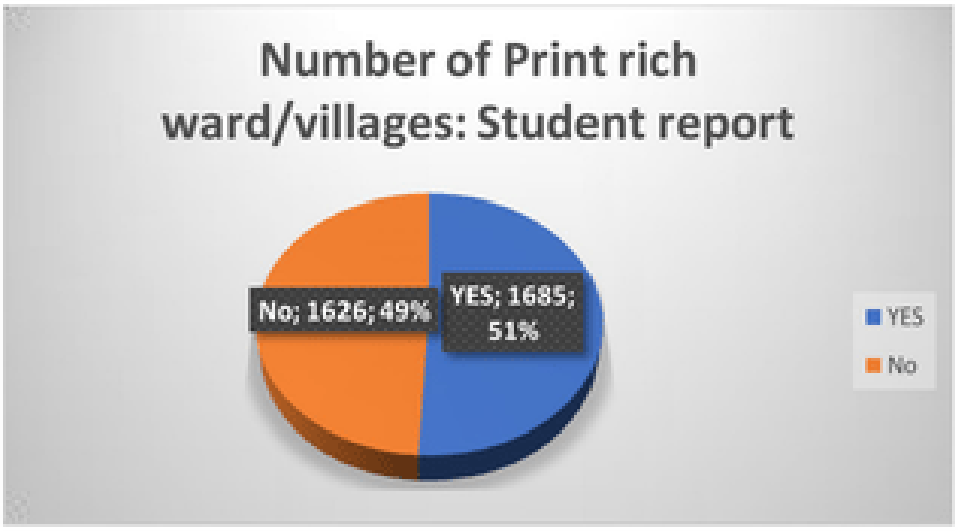

शिक्षकों के लिए प्रश्न:

क्या आपने अपने गाँव/वार्ड को प्रिंट रिच गाँव/वार्ड बना लिया है और आप उसका उपयोग बच्चों एवं नव साक्षरों के करवा रहे हैं ?
3297 शिक्षकों ने इसका जवाब हाँ में दिया है
1986 शिक्षकों ने इसका जवाब नहीं में दिया है

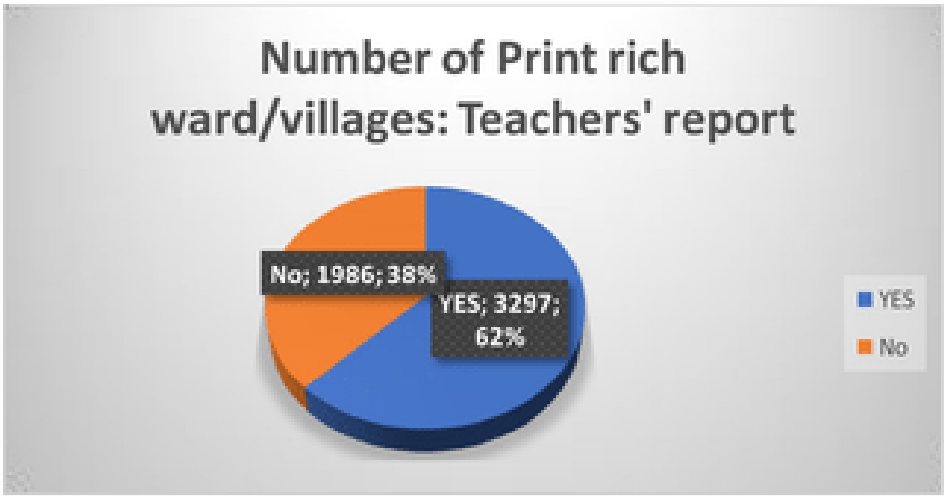

सर्वे के परिणाम के आधार पर फॉलो-अप कार्यवाहियां:

राज्य में स्कूलों के लॉकडाउन की वजह से बच्चों एवं नव-साक्षरों को निरंतर सीखने एवं मूलभूत जानकारियों को विशेषकर बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता के लक्ष्यों की समय पर प्राप्ति हेतु सभी वार्ड एवं ग्राम स्तर पर प्रिंट-रिच गाँव एवं वार्ड की स्थापना के लक्ष्य दिए गए थे | इस सर्वे के माध्यम से फील्ड की जानकारी प्राप्त करने पर लगभग चालीस से पचास प्रतिशत गावों/वार्डों में ही यह काम संपन्न होने की जानकारी मिल रही है | इसकी प्रमुख वजह कोरोना के द्वितीय लहर एवं उनकी वजह से जिलों में लॉकडाउन लगाया जाना पाया गया है | अतः इस उद्देश्य की प्राप्ति का समय और आगे बढाते हुए सुरक्षित समय में इस कार्य को किए जाने एवं इस कार्य को संपन्न कर प्रोत्साहित करने हेतु संकुल से लेकर जिलों तक बेस्ट प्रिंट-रिच गाँव/वार्ड का चयन करने प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाना प्रस्तावित है |
गाँवों/वार्डों की रैंकिग इन बिन्दुओं को ध्यान में रखकर की जा सकती है|

क्र.	गतिविधि	कुल अंक	प्राप्तांक
1	गाँव/वार्ड को प्रिंट रिच बनाया गया है	5	
2	प्रिंट-रिच बनाने में समुदाय से भरपूर सहयोग मिला है (सामग्री तैयार करने में/ बजट में)	5	
3	सामग्री के चयन के लिए पीएलसी से सहयोग लिया गया है (विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों ने ब्लू-प्रिंट बनाया)	5	
4	लगभग सभी विषयों को उचित स्थान दिया गया है (हिन्दी/गणित/विज्ञानं/सामा.अध्ययन/सामान्य ज्ञान)	5	
5	सामग्री आकर्षक रूप से तैयार की गयी है और प्रस्तुतीकरण बहुत अच्छा है (आकार/रंग/लिखावट)	5	
6	सामग्री तैयार करते समय स्थानीय भाषा का भी जगह जगह उपयोग किया गया है (आमतौर पर बोली जाने वाली भाषा)	5	
7	अधिकांश हितग्राही इन सामग्री का उपयोग कर कुछ न कुछ सीख रहे हैं (चर्चा कर पता करें/फोटो भी लेवें)	5	
8	कुल सामग्री की संख्या सौ से अधिक है (15 अंक)	5	
9	कुल सामग्री की संख्या पचास से अधिक है (10 अंक)	5	
10	कुल सामग्री की संख्या बीस से अधिक है (5 अंक)	5	
	महायोग	**50**	

पढ़ई तुंहर दुआर पहुँचा कीर्तिमान के शिखर पर

गत वर्ष इसी दिन छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल द्वारा छत्तीसगढ़ शासन की महत्वाकांक्षी योजना पढ़ई तुंहर दुआर का शुभारंभ किया गया था। स्कूल शिक्षा मंत्री डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम के सफल निर्देशन में कार्यक्रम संचालित किया गया। इस एक साल में भले ही दुनिया के चारों ओर कोरोना पर हाहाकार मचा है, पर दूसरी ओर छत्तीसगढ़ प्रदेश ने शिक्षा के क्षेत्र में कई परचम लहराये जो, शिक्षण क्षेत्र से जुड़े सभी कर्मठ अधिकारीगण तथा शिक्षकों की मेहनत से ही संभव हो पाया है। छत्तीसगढ़ ही नहीं भारत के अन्य राज्यों में भी इसकी तारीफ की जा रही है। हाल ही में इस योजना को ई-गवर्नेंस अवार्ड कम्प्यूटर सोसायटी ऑफ इंडिया द्वारा प्रदान किया गया है।

यह उल्लेखनीय है कि इस कार्यक्रम को स्कूल शिक्षा विभाग के प्रमुख सचिव डॉ. आलोक शुक्ला ने कोविड-19 लॉकडाउन के दौरान कार्यालयों के बंद होने की स्थिति में अपने निवास पर एन.आई.सी. और विभाग की टीम के साथ बहुत ही कम लागत में बिना किसी बाहरी एजेंसी की सहायता लिए पूरी तरह विभागीय संसाधनों से सीजीस्कूलडॉटइन पोर्टल का निर्माण समग्र शिक्षा के प्रबंध संचालक श्री जितेन्द्र कुमार शुक्ला व एससीईआरटी के डायरेक्टर डी. राहुल वेंकट के समन्वय से इस कार्यक्रम का सफलतापूर्वक क्रियान्वयन कराया गया।

पोर्टल में शिक्षकों द्वारा पाठ्यक्रम व विषयवस्तु से संबंधित छात्रों के लिए उच्च कोटि शिक्षण सामग्री निर्माण कर पोर्टल में अपलोड किया गया, जो न ही प्रासंगिक था जिसमें रोचकता का भी समावेश था।इस परिपेक्ष्य में जुगाड़ स्टूडियों द्वारा 30 हजार विडियों, आडियों, वर्कशीट एवं डिजीटल रिसोर्ससेस का निर्माण कर जीरों बजट में घर से ही शिक्षकों द्वारा स्मार्ट फोन का इस्तमाल कर पॉवर पाइंट प्रस्तुतीकरण के माध्यम से अतुलनीय सीखने की प्रक्रिया को सतत जारी रखा गया है।

इसी कड़ी में एससीईआरटी एवं सीजीबीएसई द्वारा कक्षा पहली से कक्षा 12वीं तक शिक्षार्थियों की सुविधा के लिए 46,639 वर्चुअल स्कूल का सृजन कर इंटरक्टीव ऑनलाइन क्लासेस ली गई। होमवर्क, आंकलन व उपचारात्मक शिक्षण सामग्री भी वर्चुअल स्कूल के माध्यम से बच्चों को वन-टु-वन शिक्षकों द्वारा प्रदान की गई। हमारा प्रदेश वनांचल दुरस्त व दुर्गम पहाडीयों से घीरा हुआ है। इन स्थानों पर इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध न होने पर भी प्रदेश द्वारा डिजीटल कंटेंट का निर्माण किया गया। जिससे बच्चे ऑफलाइन एनरॉइड एप के माध्यम से देख सकते हैं, सुन सकते है व सीख सकते हैं। इस ऑफलाइन एनरॉइड एप में ई-बुक्स, वीडियोज, आडियोज, क्वीजेज एवं शैक्षिक विषयवस्तु ब्लूटूथ के माध्यम से शिक्षकों द्वारा ई-पाठ्य सामग्रीयों का साझा बच्चों के साथ किया गया। प्रमुखता इस बात है कि गुगल प्ले स्टोर में सीजीस्कूल एप आसानी से डॉउनलोड कर शिक्षण सामग्री प्राप्त की जा सकती है। गुगल प्ले स्टोर में बुल्टू के बोल एप में हर विषय के ऑडियों कंटेंट भी है जिसे किसी भी समय सुना जा सकता है। जिन बच्चों के पास इंटरनेट व मोबाईल की सुविधा नहीं है उनका भी भरपूर ध्यान पढ़ई तुंहर दुआर में रखा गया है। कोरोना अब अपने दुसरे वर्ष में भी जारी है और पढ़ई तुंहर दुआर योजना की भी दुसरी पारी की शुरूआत हो रही है। इस दुसरी पारी में छत्तीसगढ़ शिक्षा विभाग पुरी तरह से तैयार है और प्रदेश में बच्चों की पढ़ाई बिना रूके पढ़ई तुंहर दुआर के माध्यम से जारी रहेगी।

इंग्लिश मीडियम स्कूल में 50 प्रतिशत सीटें बलिकाओं के लिए

प्रदेश के स्वामी आत्मानंद शासकीय अंग्रेजी माध्यम उत्कृष्ट स्कूलों में अब 50 प्रतिशत सीटें बालिकाओं के लिए आरक्षित रहेंगी। लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा सभी जिला शिक्षा अधिकारियों को इस विषय में दिशा-निर्देश दे दिए है। शासकीय अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में पहली से बारहवीं कक्षा तक का संचालन किया जाना है। प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च कक्षाओं की प्रारंभिक कक्षाओं अर्थात पहली, छठवीं व नवमी कक्षा में प्रवेश के लिए अलग नियम बनाए गए हैं, जबकि शेष कक्षाओं में प्रवेश के लिए अलग मापदंड निर्धारित किए गए हैं।

गौरतलब है कि बीते वर्ष राजधानी में तीन शासकीय अंग्रेजी माध्यम स्कूल प्रारंभ किए गए थे। इस वर्ष 6 अन्य शासकीय अंग्रेजी माध्यम स्कूल प्रारम्भ किए जाने है। इन स्कूलों में शिक्षकों सहित अधिकारी-कर्मचारियों की नियुक्ति संबंधित प्रक्रिया भी स्कूलों का सेटअप तय करने के बाद शुरू कर दी जाएगी। प्रारंभिक कक्षाओं के अतिरिक्त अन्य कक्षाओं के लिए भी योग्यताएं तय कर दी गई है। इन कक्षाओं के लिए भी आवेदन आनलाइन ही होंगे।

रिक्त सीटों पर कमजोर समूह के बच्चें को प्राथमिकता दी जाएगी।प्रवेश हेतु प्राप्त अंकों का भी ध्यान रखा जाएगा अर्थात इनमें से उच्च अंक प्राप्त करने वाले छात्रों को पहले प्रवेश दिया जाएगा। अंग्रेजी माध्यम से पढ़कर आने वाले बच्चों को प्राथमिकता दी जाएगी। प्रारम्भिक कक्षाओं के लिए तय की गई योग्यताओं के मुताबिक प्रवेश के लिए आवेदन पूर्णतः आनलाइन ही होगा। 31 मई तक इसके लिए आवेदन किए जा सकेंगे। कुल सीटों में से 50 प्रतिशत सीटें छात्राओं के लिए आरक्षित रहेंगी। यदि 50 प्रतिशत सीटों पर छात्राओं का प्रवेश नही हो पाता है और ये रिक्त रह जाती हैं, उस स्थिति में इन सीटों पर छात्रों को प्रवेश दिया जाएगा। छात्राओं के लिए आरक्षित 50 प्रतिशत सीटों पर भी आरक्षित व कमजोर वर्ग की बालिकाओं को प्राथमिकता दी जाएगी। गरीबी रेखा से नीचे आने वाले छात्रों के लिए भी 25 प्रतिशत सीटें आरक्षित रहेंगी। इसके लिए पालकों को शासन द्वारा जारी आय प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना होगा। यदि सीटों से अधिक आवेदन मिले तो छात्रों का चयन लॉटरी से होगा।

शिक्षकों का हुनर दिखेगा अँगना म शिक्षा में

छत्तीसगढ़ में "पढ़ई तुंहर दुआर" कार्यक्रम को सफलतापूर्वक संचालित होते एक वर्ष पूर्ण हो चुका है। एक वर्ष में इस महत्वाकांक्षी कार्यक्रम ने बहुत सारी उपलब्धियाँ प्राप्त की। बच्चों के अध्यापन से लेकर शिक्षकों के एकजुट होकर किए जा रहे कार्य एवं नवाचारों को खोजने के लिए हमारे नायक कॉलम के माध्यम से जो प्रक्रिया का प्रारंभ किया गया था ,आज उसकी बदौलत हमारे पास सैकड़ों उत्कृष्ट शिक्षकों के नाम प्राप्त हो चुके है, जिनके प्रयास अत्यंत सराहनीय है। स्कूली बच्चों हेतु लगातार ऑनलाइन तथा ऑफलाइन कक्षाओं के संचालन होते आ रहे हैं। वर्तमान में 10वीं और 12वीं की बोर्ड परीक्षाओं की समय सारणी जारी हो चुकी है परंतु आपातकालीन विद्यालयों का संचालन फिर से स्थगित हो जाने के कारण परीक्षाओं को आगामी आदेश तक रोका गया है फिर भी हमारे शिक्षक बच्चों को सीखने-सिखाने में जुटे हुए हैं।

कोरोना की दूसरी लहर से राज्य भर में फिर से लॉकडाउन लग गया है, परंतु शिक्षकों के मार्गदर्शी स्वभाव तथा उनकी उपलब्धियों को लगातार हमारे नायक में स्थान दिया जा रहा है। इसका पूरा श्रेय स्कूल शिक्षा के प्रमुख सचिव डॉ. आलोक शुक्ला, समग्र शिक्षा के सहायक संचालक डॉ. एम. सुधीश एवं राज्य साक्षरता मिशन के सहायक संचालक व पढ़ई तुंहर दुआर के राज्य मीडिया प्रभारी प्रशांत पाण्डेय को जाता है। वर्तमान में हमारे नायक के 11वें चरण में दिव्यांग बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने वाले बीआरपी (समावेशी शिक्षा) और प्रिंटरिच वातावरण निर्माण के तहत् हर गांव- प्रिंटरिच गांव, हर वार्ड - प्रिंटरिच वार्ड की थीम पर उत्कृष्ट कार्य करने वाले शिक्षकों का चयन नायक के रूप में किया जा रहा है। राज्य भर के बहुत सारे शिक्षकों ने अपने स्कूल क्षेत्र के गाँव और वार्ड में प्रिंटरिच वातावरण तैयार किया है। जिसका उद्देश्य अपने गांव के परिवेश में ही बच्चों को सीखने सीखाने हेतु विद्यालय जैसा वातावरण निर्मित करना है।

स्कूली बच्चों को मार्च और अप्रैल माह में भी 40 दिनों का राशन

राज्य के सभी स्कूली बच्चों को कोरोना संक्रमण काल में भी मध्यान्ह भोजन योजना के अंतर्गत सूखा राशन का वितरण किया जा रहा है। स्कूल शिक्षा मंत्री डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम ने बताया कि राज्य शासन के निर्णय अनुसार कोविड-19 के संक्रमण के चलते शालाओं के बंद रहने की अवधि 01 मार्च से 30 अप्रैल तक कुल 40 शालेय दिवसों का भी पूर्व की तरह मध्यान्ह भोजन का सूखा राशन स्कूली बच्चों को खाद्य सुरक्षा भत्ता के रूप में वितरण किया जाएगा। सूखा राशन सामग्री का वितरण सुविधानुसार स्कूल में अथवा घर-घर पहुंचाकर देने के निर्देश दिए गए हैं। वितरण के दौरान बच्चों या पालकों के मध्य सामाजिक दूरी बनाए रखी जाएगी। इस संबंध में संचालक लोक शिक्षण श्री जितेन्द्र शुक्ला ने सभी जिला शिक्षा अधिकारियों को दिशा-निर्देश जारी किए हैं।

कोरोना वायरस (कोविड-19) के संक्रमण से बचाव को नियंत्रण के लिए राज्य में स्कूलों को आगामी आदेश तक के लिए बंद रखने का आदेश राज्य शासन द्वारा जारी किया गया। मध्यान्ह भोजन नियम के प्रावधान के अंतर्गत बच्चों को स्कूल बंद रहने की अवधि में खाद्य सुरक्षा भत्ता प्रदान किया जाना है। अतः खाद्य सुरक्षा भत्ता के रूप में बच्चों को सूखा चावल एवं निर्धारित कुकिंग कास्ट की राशि से अन्य आवश्यक खाद्य सामग्री - दाल, तेल, सूखी सब्जी इत्यादि वितरित किया जाना है।

मध्यान्ह भोजन योजना की गाईडलाइन के अनुसार कक्षा पहली से 8वीं तक के उन बच्चों को जिनका नाम शासकीय शाला, अनुदान प्राप्त अशासकीय शाला अथवा मदरसा-मकतबा में दर्ज है, मध्यान्ह भोजन दिया जाए। सूखा राशन वितरण में बच्चों को चावल, दाल एवं तेल की मात्रा भारत सरकार द्वारा निर्धारित मात्रा से कम नहीं होनी चाहिए। बच्चों को प्रदाय की जाने वाली सामग्रियों को पृथक-पृथक सील बंद पैकेट बनाकर प्रति छात्र सभी सामग्रियों का एक बड़ा पैकेट बनाया जाए। वितरित की जाने वाली खाद्य सामग्रियां उच्च गुणवत्ता की होनी चाहिए। गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए सामग्रियों की पैकिंग के पूर्व और पैकिंग के बाद के फोटोग्राफ लिए जाए। सामग्री के ब्रांड से संबंधित फोटोग्राफ और सामग्री नमूनार्थ एक माह तक के लिए रखी जाए। जिससे किसी प्रकार की शिकायत होने पर गुणवत्ता के संबंध में जांच की जा सके। सूखा राशन वितरण के संबंध में प्रत्येक शाला में बच्चों को वितरित होने वाली सामग्रियों की गुणवत्ता एवं मात्रा सुनिश्चित करने हेतु सामग्री वितरण के लिए जिला स्तर पर इस प्रकार कार्ययोजना बनाई जाए जिससे इसकी सूक्ष्म मॉनिटरिंग की जा सके।

स्कूल शिक्षा विभाग से प्राप्त जानकारी के अनुसार प्राथमिक स्कूलों में 40 दिनों के लिए प्रति छात्र चावल 4 किलोग्राम, दाल 800 ग्राम, आचार 250 ग्राम, सोयाबड़ी 400 ग्राम, तेल 200 ग्राम और नमक 250 ग्राम प्रदाय किया जाना है। इसी प्रकार माध्यमिक स्कूलों में 40 दिनों के लिए प्रति छात्र चावल 6 किलोग्राम, दाल एक किलो 200 ग्राम, आचार 400 ग्राम, सोयाबड़ी 600 ग्राम, तेल 300 ग्राम और नमक 400 ग्राम प्रदाय किया जाना है। स्कूलों के लिए चावल पूर्व की तरह ही उचित मूल्य की दुकान के माध्यम से प्रदाय किया जाएगा।

कोरोना काल मे गांव की दीवारें बच्चों को सीखने में मददगार

वर्तमान मे कोरोना वैश्विक महामारी के कारण स्कूलें बंद हैं। ऐसी स्थिति में राज्य शासन द्वारा बच्चों की शिक्षा को अनवरत जारी रखने के लिए अनेक प्रयास किये जा रहे है। जिसमे प्रिंट रिंच वातावरण, सहायक शिक्षण सामग्री (टी.एल.एम. मेला), अँगना म शिक्षा, स्थानीय भाषाओं मे सामग्री निर्माण, आदि विधि से बच्चो को शिक्षा देने की मुहिम जारी है। इस कड़ी में दक्षिण बस्तर (दंतेवाड़ा) जिले के गांव-गांव में प्रिंट रिंच वातावरण तैयार कर हर गली मोहल्ला में वाल पेंटिंग कर शिक्षा की मुहिम चलाई जा रही है। जो बच्चों को अपनी पढ़ाई जारी रखने में मददगार हो रही है। पढ़ाई की कड़ी को पुनः जोड़ने और बुनियादी शिक्षा जारी रखने के उद्देश्य से छत्तीसगढ़ स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा गली मोहल्ला गांव में प्रिंट रिंच वातावरण तैयार किये जाने हेतु सभी जिलों में पत्र जारी किया गया है।

विदित है कि इसके परिपालन में दक्षिण बस्तर (दंतेवाड़ा) जिले के गांवों में प्रिंट रिंच का वातावरण बनाया गया है। जिससे बच्चे खेल-खेल में पढ़ना सीख रहे हैं और वर्तमान में यह प्रयोग कोरोना काल मे गांव की दीवारें बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा को जोड़ने में काफी मददगार साबित हो रही है। प्रायमरी स्कूल में बच्चो को बुनियादी शिक्षा दी जाती है, कोरोना के प्रभाव के चलते पढ़ाई प्रभावित है ऐसे में वाल पेंटिंग बच्चों को शिक्षा से जोड़कर लाभकारी हो रहा है। इस योजना में संकुल गीदम के सभी शालाओ में लगभग सभी वार्ड में प्रिंट रिंच वातावरण तैयार किया गया है। संकुल समन्वयक के अनुसार यहाँ सभी शिक्षकों ने अथक प्रयास किया है और इसका परिणाम बच्चो के लिए उपलब्धि होगा। जिससे बच्चे अपने घर के पास खेलते खेलते ही दीवार देखकर शिक्षा प्राप्त करेंगे।

सफलता की उड़ान

शिक्षक तारक ने वनांचल में भी टेक्नोलॉजी का किया उपयोग

जिला-गरियाबंद
शास प्रा- शाला शुक्लाभाठा
संकुल गोन-विकासखंड मैनपुर
जिला गरियाबंद, छत्तीसगढ

शासकीय प्राथमिक शाला शुक्लाभाठा गरियाबंद से करीब 72 किलोमीटर उदंती अभ्यारण्य अंतर्गत सीता नदी के सीमा पर बसा वनांचल गांव है। वन बाहुल्य क्षेत्र होने के कारण यहां के लोग वनोपज संग्रह हेतु अपने साथ अपने बच्चों को ले जाते हैं, जिसके कारण बच्चों कि उपस्थिति कम रहती थी । शिक्षक श्री तारक द्वारा बच्चों कि उपस्थिति को बढ़ाने के लिए पालकों से घर-घर जाकर संपर्क किया व माताओं से संपर्क कर उनको शिक्षा के महत्त्व को समझाया ।

शाला समिति की मासिक बैठक को ध्यान में रखते हुए पालकों के मोबाइल को आधार बनाकर पालकों का व्हाट्स एप ग्रुप बनाया तथा इस ग्रुप में बच्चों कि गतिविधियों को भेजना शुरू किया। इससे परिणाम यह हुआ कि पालक धीरे-धीरे शाला की ओर आकर्षित होने लगे। पालकों को अपने बच्चो को मोबाईल पर गतिविधियों को देखना पंसद आने लगा । उन्होंने शाला का वेबसाइट बनाकर बच्चों की ऑनलाइन प्रगति रिपोर्ट कार्ड पालकों को हर महीने भेजना सुनिश्चित किया। जो बहुत ही सफल रहा जिसकी चर्चा पालक आसपास के गांव के लोगो से भी कर रहे हैं । शाला में बच्चो को आकर्षित करने के लिए टी.एल.एम बनाकर पढ़ाना शुरू किया, जिससे बच्चो कि उपस्थिति बढ़ने लगी । शाला व कक्षा को आकर्षक बनाया, बच्चो के रुचि अनुरूप सजाया व स्मार्ट कक्षा से पढ़ाई शुरू किया ।

आपने शिक्षा के क्षेत्र में टेक्नॉलाजी का प्रयोग करते हुए नव साक्षर पालकों को बच्चों की प्रगति रिपोर्ट कार्ड को स्माइली तरीके से ऑनलाइन भेज कर शिक्षा के क्षेत्र पर नवाचारी पहल किया है। छत्तीसगढ़ समग्र शिक्षा द्वारा मासिक चर्चा पत्र में शिक्षक संतोष कुमार तारक की इस तरह की अनुठी पहल की सराहना भी की है । लॉकडाउन के इस विषम परिस्थिति में श्री तारक द्वारा बच्चों को ऑनलाइन पढ़ाने के लिये 5 शिक्षक के माध्यम से टीम, राजा पड़ाव बनाकर प्रतिदिन बच्चों को पढ़ा रहे हैं । बच्चों के मध्य प्रतियोगिता की भावना जगाने नवोदय विद्यालय चयन परीक्षा की भी तैयारी करा रहे हैं। शिक्षक द्वारा अब तक 412 ऑनलाइन क्लास लिया गया है जिसमे 7300 बच्चे शामिल हुए हैं।

ऑनलाइन शिक्षण के साथ ही बच्चो को विभिन्न स्थानीय खेल का उपयोग करना और हर खेल में पठन-पाठन गतिविधियों को जोड़ना ही इनके शिक्षण की विशेष निशानी है। इनके द्वारा प्रारम्भ की गयी बच्चों के लिए स्मार्ट क्लास पालकों एवं बच्चो को बहुत अधिक आकर्षित एवं शिक्षा में गुणवत्ता प्रदान कर रही हैं।

सफलता की उड़ान

आँचल वर्मा द्वारा सहायक शिक्षण सामग्री का बेहतर उपयोग

जिला-बेमेतरा
श्रीमती आँचल वर्मा

शिक्षा और व्यक्तित्व एक दुसरे के साथी है इसी बात को ध्यान में रखते हुए शिक्षा के नवाचार को एक नई रूप में पिरोने का श्रेय जाता है, जिला बेमेतरा की शिक्षिका श्रीमती आँचल वर्मा को। जिन्होंने शिक्षा की मूलमंत्र को समझा एवं पाठ्य विषयवस्तु को करीब से व आसानी से समझाने के लिए सहायक शिक्षण सामग्री को आत्मसात कर बच्चों के बीच जीवंतता प्रदान की।

उत्कृष्ट शिक्षिका श्रीमती आँचल वर्मा जिनके नवाचार न केवल विद्यार्थियों के शैक्षिक अधिगम स्तर को बढ़ाते है, बल्कि अन्य शिक्षकों के लिए भी प्रेरणादायी है। वैश्विक महामारी के विषम दौर में विद्यालय बंद होने के बावजूद भी इन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न नवाचारों का प्रयोग कर किसी भी तरह से शिक्षा की पहुंच विद्यार्थियों तक संभव हो सके, इस पर निरंतर प्रयास जारी हैं।

श्रीमती आँचल वर्मा का मानना है कि बच्चों में अध्ययन के प्रति रूचि उत्पन्न करने के लिए कुछ सरल, सहज, विधियों एवं नवाचारों का प्रयोग अध्यापन में करना नितांत आवश्यक है । विशेषकर ऐसी विधियाँ जिनके उपयोग से बच्चे खेल-खेल में शिक्षण अधिगम की ओर आकर्षित हो। उन्होंने विभिन्न विषयों जैसे- हिन्दी, अंग्रेजी एवं गणित आदि के सहायक शिक्षण सामग्रियों का निर्माण करके ना केवल अपने विद्यालय के विद्यार्थियों बल्कि अपने वीडियोस एवं लिंक्स यू ट्यूब पर अपलोड करके प्रदेश के अन्य विद्यार्थियों को भी लाभ पहुंचाया है । आँचल ने उपसर्ग-प्रत्यय, कैलेण्डर, चक्र घुमाकर विलोम शब्दों का मिलान, भूल-भुलैया आदि सहायक शिक्षण सामग्री का निर्माण विद्यार्थियों के लिए किया है। इनमें से कई सहायक शिक्षण सामग्री को आंचल ने स्वयं के व्यय पर बनाकर बच्चों को उपलब्ध करवाया है, ताकि बच्चे अपने घरों में भी उनका प्रयोग करके खेल-खेल में शिक्षण ले पाएं ।

उन्होंने बताया कि सहायक शिक्षण सामग्री के प्रयोग से विषय की नीरसता एवं कठिनाई समाप्त हो जाती है तथा बच्चे सरल, रुचिकर एवं व्यवस्थित रूप से अध्ययन कर पाते हैं । इनके द्वारा बहुत ही कम खर्च पर बहुउपयोगी सहायक शिक्षण सामग्री का निर्माण किया जाता है। अधिकांशतः इन सामग्रियों में चित्रों एवं माडल्स के रूप होता है। गणित विषय में इबारती प्रश्नों को हल करने के लिए उनके द्वारा बनाया गया सहायक शिक्षण सामग्री इनका पसंदीदा एवं उत्कृष्ट सहायक शिक्षण सामग्री है, जो गणित के इबारती प्रश्नों को सरल ढंग से समझाने में सहायता करता है ।

सफलता की उड़ान

अँगना म शिक्षा के तहत सरोज ने माताओं को किया जागरूक

जिला-बलरामपुर
श्रीमती सरोज शर्मा
सहायक शिक्षक,
बालक प्राथमिक शाला शंकरगढ़,जिला बलरामपुर

वैश्विक महामारी कोरोना के दौरान लॉकडाउन के चलते स्कूल बंद हो गए तब शिक्षको ने छत्तीसगढ शासन की योजना पढ़ई तुंहर दुआर के तहत ऑनलाइन एवं ऑफलाइन कक्षा के अंतर्गत मोहल्ला कक्षा के माध्यम से बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने का सफलतापूर्वक कार्य पूर्ण किया। इसी परिपेक्ष्य में राज्य की स्वप्रेरित शिक्षिकाओं ने माताओं के माध्यम से बच्चों को शिक्षा देने का एक अभिनव पहल भी किया जिसे अंगना म शिक्षा नाम दिया गया।

बालक प्राथमिक शाला शंकरगढ़ में पदस्थ सहायक शिक्षिका श्रीमती सरोज शर्मा ने अँगना म शिक्षा कार्यक्रम के तहत बालक-बालिकाओं के माताओं को जोडकर शिक्षा की उपयोगिता का पाठ पढ़ाया।

अँगना म शिक्षा की प्रारंभिक चरण में श्रीमती सरोज शर्मा ने दिनांक 22-02-2021 को संभाग स्तरीय प्रशिक्षण अंबिकापुर में प्राप्त किया। प्रशिक्षण के पश्चात् स्कूल में कार्यक्रम संचालित करने हेतु पूर्व में तैयारी कराई गाँव की माताओं, आस-पास के शाला की शिक्षिकाओं आँगनबाड़ी कार्यकर्ता शाला प्रबंधन समिति के सदस्य एवं महिला सरपंच से संपर्क कर आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम का बेसलाइन 03-03 2021 को बालक प्राथमिक शाला शंकरगढ़ में मड़ई मेला का आयोजन से हुआ। अलग-अलग काउंटर बनाकर माताओं एवं बच्चों के साथ गतिविधियाँ कराई गई, जिसमें उपस्थित बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। बेसलाइन का कार्य करते हुए सभी माताएं बहुत उत्सुक दिखाई दी एवं सभी ने मिलजुलकर गतिविधियों को पूर्ण किया । इन्होंने गतिविधियों के प्रथम मूल्यांकन को सपोर्ट कार्ड में दर्शाया भी गया।

कोरोना काल में बच्चों की पढाई बाधित न हो इसलिए सभी माताओं से आग्रह किया गया कि बच्चों को घर में उपलब्ध सामग्री के माध्यम से खेल-खेल में नियमित अध्यापन कार्य करवाएं। शिक्षिका सरोज शर्मा ने बताया कि कोरोना काल की वजह से कुछ बच्चे कार्यक्रम में शामिल नहीं हो पाए फिर भी कार्यक्रम में 20 बच्चों ने हिस्सा लिया। उन बच्चों की शैक्षणिक गुणवत्ता की जाँच काउंटर के माध्यम से की गयी जो की 62 प्रतिशत रही। सभी माताओं को अंगना म शिक्षा कार्यक्रम की पुस्तकें प्रदान की गयी, अभ्यास के लिए पेन पेपर दिए गए और माताओं से कहा गया कि घर में रखी वस्तुओं के माध्यम से बच्चों को 1 से 20 तक की गिनती, जोड़ना-घटाना एवं अक्षर ज्ञान करवाया जा सकता है। अंतिम जांच कोरोना संक्रमण बढ़ने के कारण घर-घर जाकर पूर्ण किया गया जो 80 प्रतिशत रहा।

माताओं से चर्चा के दौरान सभी माताएँ बहुत उत्सुक दिखाई दी एवं उन्होंने अन्य सभी माताओं को इस कार्यक्रम से जोड़ने एवं इसका लाभ सभी तक पहुंचाने की बात कही। कार्यक्रम में बताये अनुसार ही माताएँ बच्चों को पढ़ा रही हैं, साथ ही वितरित की गयी पुस्तकों का उपयोग भी किया जा रहा है। तो यह बात साकार होती प्रतीत होती है कि पुस्तक को उसका पाठक मिला और पाठक को उसका पुस्तक मिला।

सफलता की उड़ान

विद्यार्थियों को रोचक तरीके से सिखाती रहीं कन्याकुमारी पटेल

कन्याकुमारी पटेल
शा.प्राथमिक शाला किशनपुर
संकुल- दशरंगपुर मुंगेली जिले के मुंगेली ब्लॉक

मुंगेली जिले की एक ऐसी नवाचारी शिक्षिका जिन्होंने सहायक शिक्षण सामग्री बनाने और उसके उपयोग में बहुत ही उल्लेखनीय कार्य किया है। इन्होंने बताया कि किसी भी विषयवस्तु को प्रभावशाली एवं बेहतर ढंग से समझाने का सशक्त माध्यम सहायक शिक्षण सामग्री यानि टी.एल.एम. होता है तथा नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार विभिन्न विषय, प्रकरण को टी.एल.एम. के माध्यम से ही समझाने पर जोर दिया है] ताकि बच्चे करके सीख सके और सीखी हुई चीजें स्मृति में दीर्घकाल तक बनी रहे ।

इसी परिपेक्ष्य में शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु श्रीमती कन्याकुमारी पटेल द्वारा हिंदी, गणित, अंग्रेजी, पर्यावरण विषय के 40 से अधिक टी.एल.एम. का निर्माण किया गया है। जिससे बच्चे खेल खेल में रुचि पूर्ण एवं मनोरंजक ढंग से सीख रहे है। जोड़ मशीन, संक्रिया मशीन, बारहखड़ी एवं शब्द निर्माण, मात्राओं का झूमर, अल्फाबेट फोनिक साउंड, संख्या डाइस, विभिन्न ज्यामितीय आकृतियों से संबंधित, पेरिस्कोप, केलीडोस्कोप, दिशाओं की ज्ञान आदि पर टी.एल.एम. का निर्माण किया गया है ।

टी.एल.एम. एक है लेकिन सिख अनेक। सहायक शिक्षण सामग्री अंतर्गत चार्ट पेपर का बेहतरीन उपयोग करते हुए बच्चों को अंग्रेजी अल्फाबेट और उनकी ध्वनि सिखाने, शब्द निर्माण कराने के उद्देश्य से निर्माण किया है । विदित है कि वैश्विक महामारी कोरोना की वजह से स्कूल बंद होने पर बच्चों का पढ़ाई बाधित न हो बच्चें नियमित पढ़ाई से जुड़े रह सके। इसके लिए शिक्षिका पटेल द्वारा ऑनलाइन क्लास का नियमित और सफलतापूर्वक आयोजन http// www.cgschool.in वेबसाइट के माध्यम से किया गया। साथ ही इन्होंने कोविड-19 के सुरक्षा नियमों का पालन करते हुए शाला के नजदीक बरगद पेड़ के नीचे मोहल्ला क्लास का सफल संचालन भी किया।

इसी तारतम्य में शिक्षिका पटेल ने खिलौना से शिक्षा पर विशेष पहल की । वे जानते हैं कि वर्तमान समय में बच्चे मोबाइल एवं विभिन्न गैजेट्स में व्यस्त रहते हैं, जिससे उनका शारीरिक एवं मानसिक विकास अवरुद्ध हो रहा है। बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए श्रीमती कन्याकुमारी द्वारा विभिन्न प्रकार के खिलौनों का निर्माण किया गया जिससे बच्चों का शारीरिक एवं मानसिक विकास शीघ्रता से हो सके। इन सभी शिक्षा में की गयी अनुठी पहल व उनके नवाचारी प्रयासों के कारण मुंगेली जिले में उन्होंने अपनी एक अलग पहचान बनाई है।

सफलता की उड़ान

विरेन्द्र के नवाचार से गणित बना सरल

जिला बीजापुर
श्री विरेन्द्र कुमार देवांगन
शिक्षक विकासखण्ड बीजापुर

पढ़ई तुंहर दुआर कार्यक्रम अंतर्गत प्रदेश के अति नक्सल प्रभावित क्षेत्र बीजापुर जिले के विकासखण्ड बीजापुर के शासकीय कन्या माध्यमिक आश्रम शाला कैका के शिक्षक विरेन्द्र कुमार देवांगन चर्चा में हैं। श्री देवांगन ने कोरोना जैसे संक्रमणकाल में इन नक्सल प्रभावित सुदूर वनांचल क्षेत्र के बच्चों को शिक्षा से जोड़ने के लिए हर संभव प्रयास किया है। इनके द्वारा अपने विद्यालय क्षेत्र अंतर्गत बाजारपारा में मोहल्ला कक्षाओं का आयोजन कर बच्चों को शिक्षण में स्थानीय सामग्री का उपयोग करते हुए रोचक तरीके से नियमित अध्यापन कराया गया,

जिसके परिणामस्वरूप बच्चे इस विषम परिस्थिति में भी पढ़ाई से जुड़े रहे। इनके द्वारा विषय से संबंधित बहुत सारे सहायक शिक्षण सामग्री का निर्माण स्थानीय स्तर पर सरल सुलभ सामग्रियों से किया गया है। श्री देवांगन द्वारा बनाये गये सहायक शिक्षण सामग्रियों में से गणित विषय के कुछ प्रमुख सहायक शिक्षण सामग्री जिसे हम सभी को जानना आवश्यक प्रतीत होता है-

गणित में कोणों की समझ विकसित करने के लिए इन्होंने स्थानीय सामग्रियों की सहायता से शून्य अंश कोण से 360 अंश तक के विभिन्न कोणों को उनके नाम एवं उनके प्रकारों से अवगत कराया है। यह शिक्षण सामग्री पाँच भागों में विभाजित है। इसे आकर्षक बनाने के लिए पाँचों भागों को एक प्लाई बोर्ड में सजाया गया है।

इसी तरह इन्होंने आगे गिनतारा से दो संख्याओं का महत्तम समापवर्तक भी ज्ञात करने हेतु स्थानीय सामग्रियों का उपयोग किया। इसके अंतर्गत इन्होंने साइकिल की स्पोक 20 नग, स्पोक ब्रश तारा 155 नग, 30x30 सेमी का 2 नग गत्ते का टुकड़ा, 4 x 30 सेमी की 4 नग गत्ते का टुकड़ा, कील, हथौड़ी, रंगीन कागज, सेलो टेप, गिनतारा बनाने के लिए 30 x 30 सेमी का प्लाई 4mm आमने – सामने, 4 x 30 सेमी का गत्ता कील से फिक्स कर देते है तथा चारों 4 x 30 गत्ते में समान दूरी पर 10-10 छेद कर लेंगे, स्पोक के बराबर। अब पहले स्पोक में एक तारा, दूसरे में दो, तीसरे में 3, इस प्रकार पहले गिनतारा में कुल 55 तथा दूसरे गिनतारा में 100 तारे होंगें।

स्थानीय शिक्षण सामग्री का सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इससे पढ़ाये गये टॉपिक बच्चे कभी भी भूलते नहीं है। ये स्थानीय शिक्षण सामग्री बच्चों को खेल-खेल के माध्यम से रोचक तरीके से सीखने के लिए काफी लाभकारी है क्योंकि बच्चें इन स्थानीय सामग्रियों को भली-भाँति जानते व समझते है जिससे उनका जिज्ञासु मन शिक्षा की नई-नई उपलब्धियों की ओर स्वयं को खींचता है।

छत्तीसगढ़ दसवीं बोर्ड की परीक्षा रद्द, 12वीं बोर्ड की परीक्षा स्थगित

राज्य शासन का बड़ा फैसला

कोरोना महामारी की दूसरी लहर के भीषण प्रकोप को देखते हुए छत्तीसगढ़ सरकार ने दसवीं बोर्ड की परीक्षा को रद्द कर दी है और 12वीं बोर्ड कीपरीक्षा आगामी आदेश तक स्थगित कर दी है। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) की तर्ज पर छत्तीसगढ़ में भी माध्यमिक शिक्षा मडल की 10वीं बोर्ड परीक्षा नहीं ली जाएगी। परीक्षार्थियों को दिए गए ऑनलाइन असेसमेंट के आधार पर विषयवार अंक देकर छात्र और छात्राओं को उत्तीर्ण किया जाएगा।

स्कूल शिक्षामंत्री डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम ने बताया कि सीबीएसई ने भी 10वीं बोर्ड की परीक्षा रद्द की है। इसके अलावा अन्य राज्यों के बोर्ड की परीक्षाएं भी स्थगित हो चुकी हैं। इसलिए फिलहाल छत्तीसगढ़ की दसवीं बोर्ड की परीक्षा भी रद्द कर दी गई है।

प्रदेश में 10वीं में चार लाख 61 हजारऔर 12वीं दो लाख 86 हजार परीक्षार्थी परीक्षा में शामिल हो रहे हैं। बता दें कि कोरोना महामारी की दूसरी लहर की वजह से देशभर में 10वीं और 12वीं की बोर्ड परीक्षा प्रभावित हुई हैं। इसके पहले छत्तीसगढ़ में दसवीं बोर्ड की परीक्षा 15 अप्रैल से होनी थी, पहले तो राज्य सरकार ने 10वीं की परीक्षा स्थगित कर दी थी।

मीडिया में पढ़ई तुंहर दुआर

इंस्पायर अवॉर्ड के लिए चुने गए 3391 आइडिया

योजना

- प्रदेश से 55 हजार 565 नामांकन भेजे गए थे
- नामांकन में छत्तीसगढ़ देश में तीसरे स्थान पर
- कोरोना संकट में भी स्कूली बच्चों ने दिखाई रुचि

श्रेष्ठ 60 आइडिया का होगा चयन

राष्ट्रीय प्रतियोगिता से श्रेष्ठ 60 आइडिया का चयन किया जाना है. राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भाग लेने वाले विद्यार्थियों को स्वर्ण, रजत एवं कांस्य पदक व सांत्वना पुरस्कार के साथ ही इंद्रप्रस्थ इंस्टिट्यूट ऑफ इन्फरमेशन टेक्नालॉजी दिल्ली में बैठेक में 10 नंबर का बोनस अंक दिया जाएगा.

प्रतिभागियों को 10-10 हजार दिए गए

देशभर से प्राप्त आइडिया में से सर्वश्रेष्ठ एक लाख आइडिया का चयन जिला स्तरीय प्रतियोगिता के लिए किया जाता है. जिला स्तर पर मॉडल-प्रोजेक्ट तैयार करने के लिए प्रतिभागियों को 10-10 हजार रुपए की प्रोत्साहन राशि भी दी जाती है.

● नवभारत रिपोर्टर. | रायपुर.
www.navabharat.news

कोरोना संकटकाल में स्कूल बंद की अवधि में भी इंस्पायर अवॉर्ड के लिए स्कूली बच्चों ने रूचि दिखाई. राष्ट्रीय स्तर पर प्रदेश के 3391 आइडिया का चयन किया गया है. अवॉर्ड मानक योजना के लिए पंजीयन के मामले में छत्तीसगढ़ देश में तीसरे स्थान पर है.

बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा वैज्ञानिक सोच विकसित करने के उद्देश्य से स्टार्टअप इंडिया इनिशिएटिव प्रोग्राम के तहत भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा हर साल इंस्पायर अवॉर्ड मानक प्रतियोगिता आयोजित की जाती है. इसमें कक्षा 6वीं से 10वीं में अध्ययरत 10 से 15 वर्ष की उम्र के बच्चों से विज्ञान के क्षेत्र में नवाचार को लेकर आइडिया मंगाए जाते हैं.

शिक्षा विभाग के प्रमुख सचिव डॉ. आलोक शुक्ला तथा लोक शिक्षण संचालक जितेन्द्र शुक्ला की विशेष पहल तथा नोडल अधिकारी आशुतोष चावरे, सहायक नोडल अधिकारी हरीश वरू तथा इंस्पायर कक्ष प्रभारी दिनेश कुमार बंजारे के प्रयासों से छत्तीसगढ़ से 55,565 नामांकन भेजे गए थे. पंजीयन के मामले में छत्तीसगढ़ पूरे देश में तीसरे स्थान पर रहा. 55,565 आइडियाज में से 3391 आइडिया का चयन राष्ट्रीय स्तर पर हुआ है. इस संबंध में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा प्रमुख सचिव डॉ. शुक्ला को पत्र लिखा गया है.

माताओं को पढ़ा बच्चों को दे रहे आंगन में ज्ञान

नई शिक्षा नीति ● तीन से छह साल के बच्चों को पढ़ाने के लिए माताओं के उन्मुखीकरण का है प्रविधान

नईदुनिया विशेष

संदीप तिवारी ●रायपुर (नईदुनिया)

मुहल्लों में माताओं को पढ़ाती शिक्षिका। ● सौ. स्कूल शिक्षा

कोरोना संक्रमण काल में बदलते परिवेश को देखते हुए छत्तीसगढ़ स्कूल शिक्षा विभाग ने बच्चों के साथ-साथ अब उनकी माताओं को भी प्रशिक्षित करना शुरू कर दिया है। यह कवायद कोरोना काल में स्कूल का मुंह नहीं देख पाने वाले ऐसे बच्चों के लिए है जो आनलाइन पढ़ाई भी करने में सक्षम नहीं हैं। अंगना में ही शिक्षा के नाम से चल रहे इस कार्यक्रम में बच्चों को उनके आंगन में ही घर की चीजों से ही बने पठन-पाठन सामग्री के साथ पढ़ाया जा रहा है.

रायपुर इसका सफल प्रयोग हो चुका है। दावा है कि माताओं को पढ़ाकर उनके बच्चों को पढ़ाने का यह फार्मूला सार्थक साबित हुआ है। बच्चों में सीखने की ललक जगी है और वह भयमुक्त वातावरण के साथ पढ़ाई कर रहे हैं। कोरोना काल में अब आने वाले समय में इस मॉडल को आदर्श के रूप में देखा जा रहा है और प्रदेश के माताओं को पढ़ाने के लिए प्रशिक्षण ले रही थीं। इसके बाद एक-एक माता को पढ़ाने में जुट गईं। पहले अपने स्कूलों के बच्चों की माताओं को पढ़ाया और उन्हें छोटे बच्चों को पढ़ाने की तकनीक सिखाई। नतीजा यह हुआ कि माताओं ने अपने बच्चों को पढ़ाना शुरू कर दिया। बच्चों को खेल-खेल में शिक्षा दी गई है। जिस घर में माताएं बिल्कुल नहीं पढ़ी हैं, वहां पिता को पढ़ाने की तैयारी है।

नई शिक्षा नीति के प्रविधानों के अनुकूल

नई शिक्षा नीति में अब 5 3 3 4 के अनुसार पढ़ाई करानी है। पांच का मतलब तीन साल प्री- स्कूल और कक्षा एक और दो। उसके बाद के तीन का मतलब है कक्षा तीन, चार और पांच है। फिर तीन यानी कक्षा छह, सात और आठ। आखिरी के चार का मतलब है कक्षा 9वीं, 10वीं, 11वीं और 12वीं कक्षा है।

ऐसे पढ़ा रहीं बच्चों को : बच्चों को पढ़ाने के लिए महिलाएं अपने आसपास के फल-सब्जी सहारा ले रहीं

अंगना में ही शिक्षा के नाम से इस कार्यक्रम से परिणाम बेहतर आए

बच्चों को पढ़ाने के लिए बेहतर शिक्षण सामग्री बनाने वाले शिक्षक होंगे हमारे नायक

छत्तीसगढ़ में पढ़ई तुंहर दुआर कार्यक्रम को सफलतापूर्वक संचालित होते एक वर्ष पूर्ण हो चुका है। एक वर्ष में इस महत्वाकांक्षी कार्यक्रम ने बहुत सारी उपलब्धियां प्राप्त की। बच्चों के अध्ययन से लेकर शिक्षकों के एकजुट होकर दिए जा रहे कार्य और नवाचारों को खोजने के लिए हमारे नायक कालम के माध्यम से जो प्रक्रिया का प्रारंभ की गई थी, आज उसकी बदौलत हमारे पास सैकड़ों उत्कृष्ट शिक्षकों के नाम प्राप्त हो चुके है, जिनके प्रयास अत्यंत सराहनीय है। स्कूली बच्चों के लिए लगातार आनलाइन और आफलाइन कक्षाओं का संचालन होता आ रहा है। वर्तमान में 10वीं और 12वीं की बोर्ड परीक्षाओं की समय सारिणी जारी हो चुकी है, परंतु आपातकालीन विद्यालयों का संचालन फिर से स्थगित हो जाने के कारण परीक्षाओं को आगामी आदेश तक रोका गया है, फिर भी शिक्षक बच्चों को सीखने-सिखाने में जुटे हुए है।

ये हो चुके हैं इस कालम में शामिल

वर्तमान में हमारे नायक के 11वें चरण में दिव्यांग बच्चों की शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने वाले बीआरपी (समावेशी शिक्षा) और डिटरिच वातावरण निर्माण के तहतहर गांव- डिटरिच गांव, हर वार्ड - डिटरिच वार्ड की थीम पर उत्कृष्ट कार्य करने वाले शिक्षकों का चयन नायक के रूप में किया जा रहा है। राज्य भर के बहुत सारे शिक्षकों ने अपने स्कूल क्षेत्र के गांव और वार्ड में डिटरिच वातावरण तैयार किया है, जिसका उद्देश्य अपने गांव के परिवेश में ही बच्चों को सीखने-सिखाने के लिए विद्यालय जैसा वातावरण निर्मित करना है।

लाकडाउन में पढ़ा रहे शिक्षक हमारे नायक

राज्य भर में फिर से लाकडाउन लग गया है, लेकिन शिक्षकों के मार्गदर्शी स्वभाव, निरंतर पठन-पाठन कार्य व सहायक संचालक व पढ़ई तुंहर दुआर के राज्य मीडिया प्रभारी प्रशांत पांडेय को बनाया है। दिन-प्रतिदिन शिक्षकों

सफलता ●● यू ट्यूब देखकर भी पढ़ाई कर रहे विद्यार्थी

पाक, नेपाल समेत कई देशों में देख रहे 'पढ़ई तुंहर दुआर'

नवभारत EXCLUSIVE

कोरोना संकटकाल में ऑनलाइन और ऑफलाइन कक्षाओं के जरिए पढ़ रहे बच्चे

21 लाख से अधिक बच्चे देख चुके यू ट्यूब

यू ट्यूब के जरिए चल रही लाइव क्लास को अब तक 21 लाख से अधिक विद्यार्थी देख चुके हैं. पढ़ई तुंहर दुआर के अंतर्गत 10 लाख 22 हजार 482 कक्षाएं 1 लाख 77 हजार 421 घंटे विद्यार्थी और शिक्षक देख चुके हैं.

● वन्दन साहू | रायपुर.
www.navabharat.news

कोरोना संकटकाल में बच्चों की पढ़ाई नियमित रखने के लिए स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा शुरू किए गए पढ़ई तुंहर दुआर कार्यक्रम को हर तरफ सराहा जा रहा है. ऑनलाइन कक्षाओं के साथ ही यू ट्यूब के जरिए लाइव क्लास को न केवल भारत बल्कि पाकिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश, इंडोनेशिया समेत कई देशों में बच्चों और शिक्षकों द्वारा देखा जा रहा है.

कोरोना महामारी की वजह से प्रदेश के सभी स्कूल बंद हैं. स्कूल खुलने को लेकर अनिश्चितता बनी हुई है. स्कूल बंद होने के कारण बच्चों की पढ़ाई बाधित न हो, इसके लिए स्कूल शिक्षा विभाग ने 'पढ़ई तुंहर दुआर' कार्यक्रम की शुरूआत की. यह कार्यक्रम आरंभ करने वाले छत्तीसगढ़ देश का पहला राज्य भी बना. 7 अप्रैल 2020 को मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने इसका शुभारंभ किया था. इस कार्यक्रम के जरिए ऑनलाइन कक्षाएं संचालित की गई. वहीं बिना स्मार्ट फोन वाले बच्चों के लिए पढ़ई तुंहर पारा के नाम से ऑफलाइन कक्षाएं शुरू की गई. पढ़ई तुंहर दुआर को अवार्ड ऑफ एक्सीलेंस के साथ ही नीति आयोग द्वारा भी सराहा जा चुका है. इसके अलावा प्रदेश के कई शिक्षकों ने बच्चों की पढ़ाई को जारी रखने के लिए कई नवाचार भी किए. ● शेष पेज 2 पर

3,391 ideas of CG selected for Inspire MANAK awards

■ By Partha Sarathi Behera
RAIPUR, Apr 15

AS MANY as 55,565 innovative ideas were submitted by school students of Chhattisgarh for Inspire MANAK awards, which is the third highest in the country and out of these 3,391 ideas were selected for the awards.

is taken into account. MANAK awards to 3,391 ideas from Chhattisgarh are not a small thing considering the population of State, said Dr Shukla on Thursday.

It is worthwhile to mention, the Department of Science and Technology is successfully implementing the INSPIRE Awards –

शाबाशी देने का नया अंदाज, ई-क्लास में गुड या वर्क हार्ड... कहने के बजाय स्टूडेंट को इमोजी भेजती हैं टीचर रजनी

सिटी रिपोर्टर. रायपुर

कोरोना काल में टीचर्स ऑनलाइन पढ़ा रहे हैं। पढ़ाई में बच्चों का इंट्रेस्ट बनाए रखने और होनहारों को नए अंदाज में शाबाशी देने के मकसद से चौबे कॉलोनी स्थित मायाराम सुरजन शासकीय गर्ल्स स्कूल की टीचर रजनी शर्मा ने प्रिंसिपल डॉ. भावना तिवारी के साथ मिलकर रोचक तरीका अपनाया है। सोशल मीडिया पर अपनी फीलिंग्स शेयर करने के लिए अक्सर लोग इमोजी यूज करते हैं। इसी तर्ज पर इंग्लिश टीचर रजनी ने छत्तीसगढ़ की संस्कृति पर आधारित इमोजी तैयार किए हैं। उन्होंने पारंपरिक वाद्ययंत्र तुरही और मुखौटा पहने आदिवासियों का इमोजी तैयार किया है। अब बच्चों को डेली एक्टिविटी पर नंबर देने की बजाय इमोजी से उनकी मार्किंग कर रही हैं। तुरही वाली इमोजी का अर्थ है सी प्लस।अगर किसी को दो तुरही बनी इमोजी मिल रही है तो बी प्लस और तीन तुरही की इमोजी का अर्थ है ए प्लस। वर्क हार्ड या ट्राय अगेन कहने के लिए वे आदिवासी व्यक्ति के चेहरे की आकृति के साथ सीढ़ी वाली इमोजी भेजती हैं।

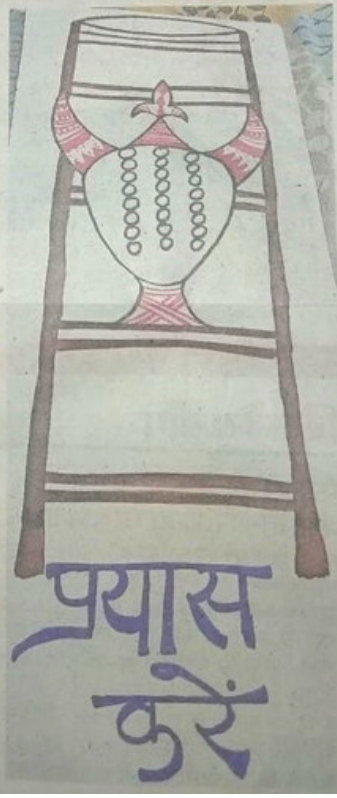

खुद तैयार किए इमोजी

टीचर रजनी ने इमोजी खुद तैयार किए हैं। ड्रॉइंग शीट पर इमोजी बनाने के बाद उन्होंने स्केच पेन से उस पर शाबाश, प्रयास करें, आगे बढ़ें... जैसे प्रेरक वाक्य लिखे हैं। इनकी तस्वीर वे बच्चों को ऑनलाइन पढ़ाई के दौरान भेजती हैं।

'Humare Nayak' column encourages teachers to perform excellently

The innovations that are being adopted in maintaining continuity in children's education.

■ The 12th phase of 'Humare Nayak' starting from today

In this episode, the names of teachers who have done excellent work in the field of 'Angana Ma Shiksha' (educa-

कोरोना जागरूकता: सोशल मीडिया पर उतरे एक्सपर्ट्स

यू-ट्यूब में प्रदेशवासियों के महामारी और स्वास्थ्य से जुड़े ऑनलाइन सवालों का दे रहे जवाब

रायपुर @ पत्रिका. कोरोना संक्रमण काल की वजह से प्रदेश के सभी जिलों में लॉकडाउन लगा है। संक्रमण की चपेट में आने की आशंका से जिलेवासी व प्रदेशवासी धीरे-धीरे डिप्रेशन की तरफ जा रहे हैं। जिलेवासी व प्रदेशवासियों को डिप्रेशन से निकाला जा सके, इसलिए स्कूल शिक्षा विभाग के जिम्मेदारों ने मदद करने की ठानी है। स्कूल शिक्षा विभाग के जिम्मेदार छत्तीसगढ़ प्रायवेट स्कूल एसोसिएशन, डॉक्टर्स और समाजसेवी की मदद से सोशल मीडिया में आकर लोगों के सवालों का जवाब दे रहे हैं और उनकी परेशानियां को दूर करें। जिलेवासी व प्रदेशवासियों की समस्या को दूर किया जा सके, इसलिए दिन में दो बार यू-ट्यूब में ऑनलाइन कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इस कार्यक्रम में डॉक्टर्स व समाजसेवी लोगों को जागरूक कर रहे हैं।

हमर गोठ सेहत बर दिया नाम

स्कूल शिक्षा विभाग के सचिव आलोक शुक्ला ने प्रदेशवासियों को जागरूक करने के लिए डॉक्टर्स व समाजसेवियों की बैठक तीन दिन पहले बुलाई थी। बैठक में तय किया गया था, कि समाजसेवी-डॉक्टर्स के साथ मिलकर कार्यक्रम बनाएंगे और उसका प्रचार प्रसार किया जाएगा। बैठक के बाद डॉक्टर्स और समाजसेवियों ने आपसी सहमति से प्रोग्राम चार्ट बनाया। इस चार्ट को जिम्मेदारों द्वारा हमर गोठ सेहत बर नाम दिया गया है। इस प्रोग्राम के माध्यम से स्कूल शिक्षा विभाग के जिम्मेदार, डॉक्टर्स और समाजसेवी लोगों को जागरूक कर रहे हैं।

डॉक्टर राकेश गुप्ता आज देंगे जानकारी: छत्तीसगढ़ प्रायवेट स्कूल एसोसिएशन के अध्यक्ष राकेश गुप्ता ने बताया कि कठिन समय में सभी डॉक्टर्स, समाजसेवी, कारोबारी और निजी स्कूलों के संचालक लोगों की मदद कर रहे हैं। हमर गोठ सेहत बर कार्यक्रम का आयोजन कोविड काल में लोगों को डिप्रेशन दूर करने और जागरूकता फैलाने के लिए किया जा रहा है। पिछले दिनों कार्यक्रम में डॉ संदीप दवे व डॉ स्मिथ श्रीवास्तव ने लोगों को परेशानियों को दूर किया था। सोमवार को डॉ. राकेश गुप्ता ऑनलाइन आकर प्रदेशवासियों की समस्या को दूर करेंगे। ऑनलाइन जुड़ने प्रदेशवासी सीजी कोविड जनसहायता डॉट कॉम में क्लिक करके एक्सपर्ट्स के ऑनलाइन रहने का समय जान सकेंगे और खुद ऑनलाइन रहकर अपनी शिकायतों का समाधान कर सकेंगे।

कोविड काल में जरूरतमंदों की जानकारी मिल सके और उसकी समस्या का समाधान हो सके, इसलिए जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। प्रदेशवासी सीजी कोविड जनसहायता डॉट कॉम में क्लिक करके अपनी समस्या का समाधान कर सकेंगे।

डॉ आलोक शुक्ला,
सचिव, स्कूल शिक्षा विभाग

नवाचारी शिक्षकों की गतिविधियों की प्रशंसा

बेमेतरा। जिला शिक्षा कार्यालय द्वारा आयोजित "रुचिकर नवाचारी गतिविधियों का प्रदर्शन"कार्यक्रम शहर के निजि पब्लिक स्कूल में सोमवार को किया गया। इस अवसर पर उपस्थित जिलाधीश शिव अनंत तायल ने उक्त रुचिकर,ज्ञानवर्धक कार्यक्रम के लिए जिला शिक्षा अधिकारी सहित समस्त नवाचारी शिक्षकों के प्रयासों की प्रशंसा की।

मोहला के 16 संकुलों में टीएलएम की प्रदर्शनी

हरिभूमि न्यूज ⏭ राजनांदगांव

मोहला ब्लॉक के 16 संकुल केंद्रों में प्राथमिक व माध्यमिक स्तर के शिक्षकों द्वारा सहायक शिक्षण सामग्री टीएलएम का प्रदर्शन किया गया। सहायक बीईओ राजेन्द्र कुमार देवांगन ने बताया कि अध्यापन कार्य में शिक्षकों द्वारा बच्चों की समझ बढ़ाने अपने शिक्षण में सहायक उपकरण या चीजों का इस्तेमाल किया जाता है। इन्हीं सामग्रियों को टीएलएम के रूप में सभी संकुल केंद्रों में शिक्षकों द्वारा प्रदर्शित किया गया। इसी कड़ी में एबीईओ देवांगन द्वारा उरवाही, बीईओ अंबादे व बीआरसी वर्मा द्वारा पेंदाकोड़ो संकुल के टीएलएम का अवलोकन किया गया।

मोहला बीईओ देवांगन ने बताया कि टीएलएम प्रदर्शनी भोजटोला में भुनेश्वर विश्वकर्मा, आलकन्हार में पिलालाल देशमुख, दनगढ़ में गजेंद्र यादव, दुगाटोला में मार्टिन मसीह, डुमरटोला में ओमप्रकाश देशमुख, गोटाटोला में आलोक मसीह, ककईपार में घनश्याम सिंह देशमुख, कंदाड़ी में केवल साहू, कोर्रामटोला में रूपेंद्र नंदे, उरवाही में बंशीलाल निषाद, वासडी में रमेश कोर्राम, पेंदाकोड़ो में विष्णु निषाद, पाटनखास में कुमार डिल्ला, मोहला में मलेश मालेकर, शेरपार में प्रदीप मंडावी, रेंगाकठेरा में विष्णु साहू की देखरेख में कार्यक्रम संपन्न हुआ। ब्लॉक स्तर पर बीआरसी वर्मा का मार्गदर्शन रहा।

शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी रहा मोहला

पढ़ई तुंहर दुआर के जिला मीडिया प्रभारी सतीश ब्यौहरे ने भी मोहला के संकुल समन्वयकों व विभाग अधिकारियों के इन प्रयासों की प्रशंसा की है। उन्होंने कहा कि मोहला क्षेत्र प्रारंभ से ही शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी रहा है। इस ब्लॉक के शिक्षकों में नवाचारी सोच की अधिकता है। मोहला क्षेत्र में सहायक शिक्षण सामग्री टीएलएम प्रदर्शनी के सफल आयोजन के लिए संसदीय सचिव एवं विधायक इंद्रशाह मंडावी व समाजसेवी संजय जैन ने भी शिक्षा विभाग को बधाई दी है।

चार साल में तैयार कर दिए 5 सौ से ज्यादा गणित के लर्निंग मटेरियल

पत्रिका शिक्षक बेमिसाल

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

भिलाई . खुद सरकारी स्कूल में पढ़ाई की तो इस बात का अहसास था कि शिक्षक ही हैं जो स्कूल की तस्वीर बदल सकते हैं। बचपन से गणित में रूचि थी। शिक्षिका बनने के बाद जुनून में बदल गई और उसी का नतीजा है कि चार साल में मैथ्स के 5 सौ से ज्यादा टीचर लर्निंग मेटेरियल तैयार किया और वह भी बिना किसी लागत के। हनोदा मीडिल

इतना आसान बना दिया कि बच्चे खेल-खेल में गणित आसानी से सीख गए। बच्चों को अब इतना मजा आने लगा कि वे भी टीचर का साथ देने लगे और वे भी मटेरियल बनाना सीख गए।

शिक्षक प्रज्ञा बताती हैं कि उनके तैयार किए लर्निंग मटेरियल स्कूल से लेकर डाइट सेंटर में भी मौजूद हैं। इसे तैयार करने के लिए उन्हें मास्टर ट्रेनर भी बनाया गया है। उन्होंने बताया कि अन्य विषयों की तुलना में गणित के लिए शिक्षण सहायक सामग्री का अभाव था और यही सोचकर उन्होंने टीएलएम बनाना शुरू किया। इसका असर यह हुआ कि पिछले कई सालों से कम हो रहे सरकारी स्कूल में

अपने खर्च से कराए कार्य

प्रज्ञा ने न केवल टीएलएम के लिए अपना योगदान दिया बल्कि अपने खर्च से वे कई सामाजिक सरोकार के कार्यक्रम कर भी करा रही हैं। स्कूल के सारे बच्चों का जन्मदिन नए साल के दिन मनाने के साथ ही गर्मी की छुट्टियों में मस्ती की पाठशाला, नवरात्रि उत्सव, परंपरागत उत्सव, बाल मेला, स्मार्ट क्लास की सुविधा उलपब्ध कराई। अपने पूर्व छात्राओं के साथ मिलकर प्रज्ञा युवा शक्ति संगठन

जुड़े प्रदेशभर से बच्चे

12 साल से हनोदा स्कूल में अपनी सेवाएं दे रही टीचर प्रज्ञा सिंह ने बताया कि लॉकडाउन के बाद सीजी स्कूल पोर्टल पर शुरू हुई ऑनलाइन क्लास में अब तक उन्होंने 59 वीडियो लर्निंग मटेरियल के साथ अपलोड किए हैं। इसके लिए उन्होंने घर पर रहकर ही करीब डेढ़ सौ मॉडल बनाए। इस वीडियो को न केवल दुर्ग जिले बल्कि कई अन्य जिलों के साथ-साथ नारायणपुर और अबूझमाड़ जैसे क्षेत्रों में भी देखा गया। वे बताती हैं कि इन दिनों चल रही मोहल्ला क्लास में उन्होंने गांव की शिक्षित बहू-बेटियों को शिक्षा सारथी

प्राइवेट से सरकारी स्कूल में एडमिशन

हनोदा मीडिल स्कूल के नवाचार को देखते हुए कई पालकों ने प्राइवेट स्कूल से निकालकर बच्चों का एडमिशन सरकारी स्कूल में कराया है। हाल ही में गांव के सरपंच तेजराम चंदेल ने अपने नाती का एडमिशन भी इसी स्कूल में कराया। प्रज्ञा के इस प्रयास को जिला से राज्य स्तर और कई राष्ट्रीय मंचों में सराहा गया और अब तक वे राज्यपाल पुरस्कार सहित 20 से ज्यादा सम्मानों से सम्मानित

कोरोना से बचने जागरूकता ला रहे शिक्षक, बच्चे

हरिभूमि न्यूज ⏭ पेंड्रा

कोरोना से जंग जीतने जीपीएम जिले के शिक्षक और स्कूली बच्चे अभिनव प्रयास कर रहे हैं। वे लोगों को गाइड लाइंस का पालन करने, कोरोना की जांच कराने और वैक्सीनेशन के लिए जागरूक कर

खास बात

- गाइड लाइंस का पालन करने और वैक्सीनेशन की अपील

टीएलएम मेले में बैजन्ती हमराज का मॉडल प्रथम

छुरिया, (सबेरा संकेत)। स्कूली शिक्षा विभाग छत्तीसगढ़ शासन की मंशानुसार गत दिवस संकुल समन्वयक दिनेश कुरेटी के नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में कल्लूबंजारी संकुल स्तरीय टीएलएम प्रदर्शनी मेला का आयोजन किया गया। जिसमें प्राथमिक शाला दामाबंजारी के शिक्षिका बैजन्ती हमराज द्वारा बनाये गये मॉडल को प्रथम स्थान मिला।

मेले में संकुल आश्रित 14 प्राथमिक शाला एवं 05 माध्यमिक शाला के 47 शिक्षक-शिक्षिकाओं ने भाग लेकर अपने द्वारा बनायी गयी सहायक शिक्षण सामग्री का प्रदर्शन एवं प्रस्तुतिकरण किया। जिसमें प्राथमिक शाला

चन्द्रवंशी द्वारा बनाये गये टीएलएम मॉडल को तृतीय स्थान प्रदान किया गया।

निर्णायक के रूप में हायर सेकेंडरी स्कूल कल्लूबंजारी के प्राचार्य जी.कुंजाम, हाईस्कूल रामतराई के प्राचार्य द्वारका प्रसाद मंडावी, हायर

पाठक कृष्णा राम साहू एवं पूर्व माध्यमिक शाल कल्लूबंजारी के उच्च वर्ग शिक्षक अधीन राम सा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

कार्यक्रम का सफल संचालन एवं आभा प्रदर्शन संकुल समन्वयक दिनेश कुरेटी ने किया प्राचार्य द्वय जी. कुंजाम एवं द्वारका प्रसाद मंडावी तथा संकुल समन्वयक दिनेश कुरेटी ने प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान के लिए क्रमशः बैजन्ती हमराज, हितेश कुमार साहू एवं वीरेन्द्र कुमार चन्द्रवंशी तथा विशेष स्थान के लिए सरिता पटेल, दिलीप कुमार साकरे, चुम्मन लाल भुआर्य, हरेन्द्र कुमार साहू, बेबीता साकरे,

स्ट्रॉ से शिक्षिका ने तैयार किया फाउंटेन

भास्कर न्यूज़|जगदलपुर

कोरोना संक्रमण के कारण जिले में लॉकडाउन लगा हुआ है। स्कूल बंद है। लेकिन कुछ शिक्षक इस बंद के बाद भी बच्चों के लिए कुछ न कुछ करने के लिए आगे आ रहे हैं। इसी क्रम में बस्तर जिले के तोकापाल ब्लॉक की प्राथमिक शाला आंवराभाटा संकुल केंद्र डिमरापाल में सहायक शिक्षक नीलम सोरी ने डिस्पोजेबल बॉटल और स्ट्रॉ

स्कूल खुलने पर बच्चों को दिखाएंगी खिलौने

शिक्षिका नीलम ने कहा कि कोरोना महामारी, ग्रामीण क्षेत्र और एंड्राइड मोबाइल की उपलब्धता कम होने के कारण केवल कुछ बच्चे ही इसका लाभ ले पा रहे हैं। इस लॉकडाउन पर वह घर पर ही खिलौने और टीएलएम बनाकर संग्रह कर रही हैं ताकि स्कूल खुलने पर अध्यापन

प्रिंट रिच के माध्यम गली मोहल्ले में ही पढ़ सकेंगें बाखरा संकुल के बच्चें

कोंडागांव/ट्रैक सीजी। इस समय पूरी दुनिया कोविड-19 कोरोना महामारी की मार झेल रहा है। इस मुश्किल घड़ी में शिक्षा रूपी दीपक को जला के रखा है, जिला कोंडागांव के संकुल केंद्र बाखरा, वि.खंड कोंडागांव के शिक्षकों ने। जिला मीडिया प्रभारी शिक्षक शैलेन्द्र कुमार ठाकुर ने जानकारी देते हुए बताया कि प्राय: प्राय: छत्तीसगढ़ के सभी जिलों में कोविड-19 के बढ़ते प्रकोप के कारण सभी शैक्षणिक संस्थाएँ पूरी तरह से बंद हैं। महामारी के इस दौर में लॉक डाउन लगने के पूर्व संकुल के समस्त प्राथमिक एवं माध्यमिक शालाओं के शिक्षक-शिक्षिकाओं ने संबंधित शाला ग्राम के गली मोहल्लों, अनुपयोगी जगहों, चौक चौराहों, घर की दीवारों पर प्रिंट रिच का निर्माण किया है। इस कार्य विधि में शिक्षकों द्वारा अनुपयोगी जगहों पर दीवाल पेंट कर, व्हाइट बोर्ड, ब्लैक बोर्ड निर्माण कर उसमें अलग-अलग विषयों जैसे हिंदी, पर्यावरण, गणित, अंग्रेजी, विज्ञान से संबंधित बुनियादी शिक्षा को कलर ब्रश एवं रंगीन चाक की सहायता

से चित्र बनाकर, स्केचिंग, चार्ट एवं लेखन के माध्यम से उभारा गया है। जिसे बच्चे अपने पारा मोहल्ला मे रहते हुए अपने गली मोहल्लों से गुजरते हुए आसानी से पढ़ सकेंगे एवं पढ़ाई लिखाई के बुनियादी शिक्षा के संपर्क में रहेंगे एव निश्चित ही उन्हें इसका लाभ मिलेगा संकुल के समस्त शाला ग्रामों में प्रिंट रिच निर्माण का कार्य संकुल समन्वयक राज राम दीवान के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ।

प्रिंटरिच वातावरण निर्माण हेतु कराया ज्ञानवर्धक वालपेंटिंग, मंदिर बनी पाठशाला

सूरजपुर। शासकीय प्राथमिक शाला झारपारा (पम्पापुर) में राज्य परियोजना कार्यालय समग्र शिक्षा छत्तीसगढ़ द्वारा दिये गये निर्देश के बाद शासकीय प्राथमिक शाला झारपारा के विद्यालय क्षेत्र अंतर्गत चयनित स्थानों पर कक्षानुसार ज्ञानवर्धक चित्र बनवाएं, जिसमें एक सशक्त संसाधन माना जाता है। प्रिंटरिच वातावरण से बच्चों में पढ़ाई के प्रति रूचि और आत्मविश्वास में काफी वृद्धि होती लाभ नहीं मिल पा रहा हैं, इसलिए बच्चों में पढ़ाई के प्रति रूचि बनाने रखने के लिए गाँव व वार्ड के खाली दीवारों का चयन करके

फोटो गैलरी

फोटो गैलरी

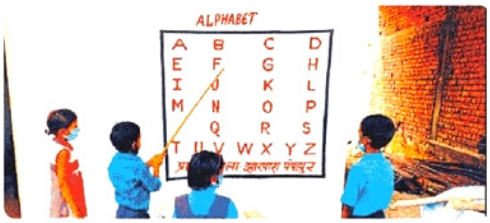

आज की ताजा खबर भी

आज की ताजा खबर के माध्यम से शिक्षकों द्वारा एक अच्छी पहल की गई है। रोजाना के खास समाचार को इस पर लिखा जाता है, जिसे ग्रामीण पढ़कर काफी खुश हो रहे हैं क्योंकि इसके माध्यम से उन्हें रोजाना की महत्वपूर्ण खबरों की जानकारी आसानी से मिल रही है। प्रिंटरिच वातावरण निर्माण कार्य हेतु राज्य कार्यालय समग्र शिक्षा छत्तीसगढ़ द्वारा प्रत्येक विद्यालय को प्रचार-प्रसार हेतु जारी 1500 रूपये की राशि के साथ युवा एवं इको क्लब की राशि का भी उपयोग करने हेतु निर्देशित किया गया है।

दीवारों पर बने शैक्षणिक पेंटिंग को मिल रहा है। इस कार्य में विद्यालय

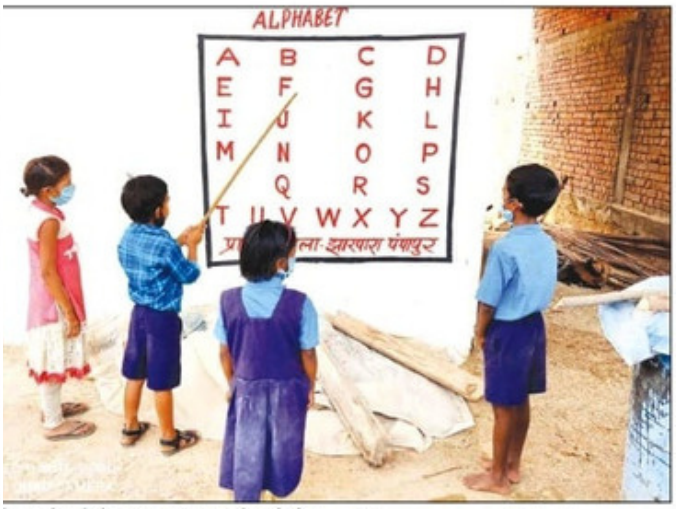

पढ़ई तुंहर दुआर

cgschool.in

स्कूल शिक्षा विभाग, छत्तीसगढ़ शासन

हमारे नायक

छत्तीसगढ़ शासन

पढ़ई तुंहर दुआर

cgschool.in

स्कूल शिक्षा विभाग, छत्तीसगढ़ शासन

हमारे नायक में शामिल होने हेतु अवसर: इस बार न चूकें

साथियों ! अक्सर यह शिकायत होती है कि हम बहुत सारा काम कर रहे हैं पर हमारे काम को हमारे नायक में शामिल नहीं किया जाता | यहाँ सभी को यह जानना आवश्यक है कि हमारे नायक में चयन की एक प्रक्रिया निर्धारित की गयी है जिसमें अलग - अलग चक्रों में अलग - अलग थीम पर फोकस कर हमारे नायक के लिए नाम प्रस्तावित किये जाते हैं | इन नामों का परीक्षण कर उपयुक्त पाए जाने पर शिक्षकों का चयन कर उन पर ब्लॉग लिखा जाता है | अक्सर हमारे साथी अपने काम को उस थीम के अनुसार प्रारंभ करने में विलंब कर देते है और तब तक उनके जिले से कोई और नाम आ जाता है |

इस शिकायत को दूर करने हेतु आइये हम आपके साथ आगामी कुछ थीम साझा कर रहे हैं | इन मुद्दों पर अभी से काम कर अपनी पहचान अपने जिले में बनाएं और मीडिया से उसका व्यापक प्रचार - प्रसार करें ताकि आपके साथी आपके नाम को अपने जिले से प्रस्तावित कर सकें | विभिन्न मुद्दों पर नाम प्राप्त करने हेतु अलग - अलग लिंक शीघ्र सोशल मीडिया के सभी प्लेटफार्म में भेजे जाएंगे | लेकिन उसके पहले अपने काम से अपनी पहचान बनाए | एक बात और सामने आई है कि अपना नाम हमारे नायक में शामिल होने के बाद लोग फिर काम करना बंद कर देते हैं | वास्तविक नायक को अपना काम केवल नाम या पुरस्कार के लिए न करते हुए बच्चों के हित में बिना किसी को दिखाए करते रहना चाहिए |

साथियों हमारे नायक में वास्तव में हमे ऐसे ही साथियों की तलाश है, जो दिखावे, पुरस्कार की लालसा एवं प्रसिद्धि के बदले केवल बच्चों के हित में काम करें | आपके आसपास इन मुद्दों पर काम कर रहे शिक्षकों की पहचान कर उन्हें अपने काम के लिए प्रोत्साहत करें और उसका विस्तार करते हुए हमारे नायक के लिए लिंक भेजे जाने पर उनका नाम और विवरण लिंक में प्रस्तावित करें-

Theme One:

बच्चों के लिए विभिन्न कक्षाओं में अभ्यास हेतु भेजी गयी पुस्तिकाओं का उनके घर पर रहकर नियमित उपयोग कर कोविड के दौरान सीखना जारी रखने हेतु किए जा रहे नवाचारी प्रयास – शिक्षक द्वारा

अपने क्षेत्र में संकुल/ विकासखंड/ जिले में बच्चों के लिए विभिन्न कक्षाओं में अभ्यास हेतु भेजी गयी पुस्तिकाओं का उनके घर पर रहकर नियमित उपयोग कर कोविड के दौरान सीखना जारी रखने हेतु किए जा रहे नवाचारी प्रयास – CAC/BRCC/BEO/DEO/संकुल प्राचार्य द्वारा

Theme Two:

बच्चों के शिक्षा पर ध्यान देने वाले और उनके शिक्षा लगातार जारी रखने के लिए सामने आकर कार्य कर रहे हैं शाला प्रबंधन समिति का विवरण – SMC active member

ऐसे अधिकारी जो शाला प्रबन्धन समिति को लगातार सक्रिय रखकर उन्हें बच्चों की शिक्षा पर ध्यान देने हेतु प्रोत्साहित कर रहे हैं – शिक्षक/CAC/BRCC/BEO/DEO/संकुल प्राचार्य द्वारा

Theme Three:

युवा एवं इको क्लब को पुनर्जीवित करने के लिए कुछ नया कर रहे शिक्षक/CAC/BRCC/BEO/DEO/संकुल प्राचार्य द्वारा

युवा एवं इको क्लब को पुनर्जीवित करने के लिए कुछ नया कर रहे क्लब के मंत्री - विद्यार्थी

हमारे नायक : शिक्षक

HEMANT KUMAR

शेख अफजल

प्रमिला एंजा

PREMLATA MARKAM

Premlata Dewangan

Gajadhar RATHORE

Deena tandiya

महेत्तर लाल देवांगन,

CHUMESHWAR RAM KASHI

मनीषा सोनी

संतोष कुमार साहू

Narsing ram sahu

Vikram chand verma

खोरबाहरा सोनवानी

मनोज कुमार पाटनवार

Pragya singh

कन्याकुमारी पटेल

सुभाष सिंह बेलचंदन

Prashant Tirkey

Bise Lal

Sangeeta Panda

पूर्णेश डड़सेना

श्रद्धा शर्मा

विरेन्द्र कुमार देवांगन

Aanchal verma

Hemlata gajendra

CHANDRIKA MIRI

Vasanti Sinha

SANJEEV KUMAR SURYAWANSHI

रमेश कुमार यादव

संपादक मंडल

• डॉ. योगेश शिवहरे • ए. के. सोमशेखर • प्रशांत कुमार पाण्डेय • डॉ. एम. सुधीश

• डॉ. विद्यावती चंद्राकर • सत्यराज अय्यर • डॉ. जयाभारती चंद्राकर

नीचे दिये गए बटन पर टैप करके हमसे जुड़े

t.me/ptdnews

/ptdchhattisgarh

पढ़ई तुंहर दुआर

scert.del@gmail.com